

श्रीप्रियाजी को प्रियतम के इष्टदेव का दर्शन

दसवाँ प्रेमी- (सप्रेम वन्दन करके) परम पूज्य प्रिय
स्वामीजी ! मैं सद्गुरुदेव का मंगल मनाकर हरी-भरी वृक्षा-
वली में जा बैठा । ऐसा मालूम पड़ा मानो श्रीवृन्दावन ही है ।
ब्रज-वन की सुन्दर-सुन्दर, लोनी-लोनी, लहलही लताओं की
मनोहर झाँकी मेरी डहडही आँखों के सामने झिलमिलाने लगी ।
यह तो बड़ा ही मनोहर, सघन छाया से मण्डित रंग-बिरंगे
पुष्पों से सुसज्जित एक अद्भुत निकुंज है । इस निकुंज में मधुर
सुकुमार ठण्डी चाँदनी छिटक रही हैं मानों कोटि चन्द्रमा की
हो । इस दिव्य सिंहासन पर श्रीकृष्णप्राणवल्लभा श्रीवृन्दावन-
महारानी विराजमान हैं । उनके चरणों की सहज स्वभावविक
मधुर लालिमा में महावर की लालिमा मिल गयी है और हरी-
हरी दूबपर पड़कर एक विचित्र आनन्द प्रदान कर रही हैं ।
अच्छा, श्रीस्वामिनीजी के तलवों में यह कुछ अक्षर-से जान पड़ते
हैं ! यह क्या हैं ? ओ हो ! समझ गयी । यह तो गोपालसहस्र
नाम है । हृदय में आनन्द की बाढ़ आ गयी । मेरा तन, मन सब
उसमें डूबने-उतराने लगा । वाह वाह ! यह देखो, चोर-जार-
शिखामणि लिखा हुआ है । यह किसने लिख दिया है ? समझ
गयी, समझ गयी । स्वयं प्रियतम ने श्रीप्रियाजी के चरणकमलों में
निवास करने के लिये इसमें नाम लिख दिये हैं । मैं श्रीप्रियाजी
के चरणकमलों में उन नामों को पढ़ ही रही थी कि दूर से
श्रीप्रियाजी के नाम की मधुर-मधुर ध्वनि आयी मानों मेरे कानों

मैं किसी ने अमृत उँडेल दिया हो । उस प्रेम भरे आलाप से खिचकर जिधर से ध्वनि आ रही थी उधर के लिये ही श्रीप्रियाजी चल पड़ीं मानों धुरधाम की वंशीध्वनि सुनकर सुरत कलारी मतवारी होकर शब्द की डोरीपर चढ़ी जा रही है । वे नन्ही-सी किन्तु हरी-भरी फूलों से सजधज कर खड़ी पहाड़ी के सिर-पर चढ़ गयीं । वहाँ जाकर श्रीप्रियाजी देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर की झोली सुन्दर-सुन्दर फूलों से भरी हुई है और वे प्रेममग्न होकर मधुर-मधुर संगीत गाते जा रहे हैं । गाते-गाते उन्होंने अपनी पीत झँगुलिया की जेब से चाँदी के तागे और लाल पाग से सोने की सुई निकाल ली और हार पिरोने लगे । सुकुमारी श्रीस्वामिनीजू प्रियतम के समीप जा पहुँची और बोलीं- “हे साँवरे सलोने सुकुमार किशोर ! किस देवता के लिये माला गूँथ रहे हो ? लाओ, मैं तुमसे अच्छी गूँथ दूँ । मनमोहन, मधुरश्याम ! आपकी यह भोली-भाली सूरत, यह मधुर मनोहर मूरत मेरे मन को मोहित कर चुकी हैं । तुम्हारे लिये मेरा यह मन बावरा बना फिरता है । बताओ तो सही तुम्हारे प्रेमपूर्ण कर-कमलों का स्पर्श पाकर बड़भागी बना यह सुन्दर हार किस सुहागभरे देवताके कण्ठको सुशोभित करेगा ?”

मुस्कराकर मनमोहन ने कहा-“गौरी देवी ! आज मैं अपने हृदयमन्दिर में सिंहासनासीन अपने इष्टदेवता को यह हार पहनाऊँगा । फूलों का सुन्दर झूला बनाकर हरियाली तीज पर अपने हृदय-देवता को झुलाऊँगा ।”

श्रीस्वामिनीजी उल्लास से भरकर बोलीं-“मेरे प्यारे हृदयेश्वर ! तुम मुझे अपने हृदयेश्वर का दर्शन करा दो ।” श्रीप्रियाजी थिरक के प्रियतम के पास पहुँच गयीं और बायें हाथ से उनकी दाहिनीभुजा पकड़कर मचलने लगीं- “देखूँगी, देखूँगी देखूँगी !” दाहिने हाथ से हृदय से उनकी झँगुली का पल्ला हटाया और बोलीं-“ मैं तो देखके मानूँगी कि मेरे प्रियतम के हृदय में, नेत्रों में, रोम-रोम में कौन विराजमान है । मैं अपना यह नौलखा हार अपने हृदयेश्वर के हृदयेश्वर के हृदय पर चढ़ाऊँगी ।”

अपनी प्राणप्रिया के मधुर प्रेमामृतपूर्ण वचन सुनकर प्रियतम का रोम-रोम खिल उठा, दिल बाग-बाग हो गया । हर्षका समुद्र लहरा उठा । प्यारे ने गद्गद्-कण्ठसे, मानों अपने प्यारे की मधुर स्मृति में डूब गये हों, अपने भाव को छिपाते हुए कहा-“देवी ! मुझे क्षमा करो, मैं लाचार हूँ । अपना ठाकुर मैं तुम्हें नहीं दिखा सकता । ऐसा करने से वह रूठ जायेगा ।” प्रेममूर्ति श्रीस्वामिनीजी ने कहा-“डरो मत प्यारे ! निर्भय होकर अपने आराध्यदेव का दर्शन कराओ । मैं उन्हें अपने स्नेह, शिष्टाचार से मना लूँगी । ऐसा प्रसन्न करूँगी-ऐसा प्रसन्न करूँगी कि वे तुमसे कभी न रूठें ।” श्यामसुन्दर ने कहा- “अच्छा प्रियाजी, कभी न रूठेंगे ? तुम ऐसा वायदा करती हो ? इस बात को भूलना मत ।”

श्रीप्रियाजी ने कहा- “हाँ नहीं रूठेंगे । तुम एक बार, केवल एक बार दिखा भर दो ।”

प्रियतम ने प्रसन्न होकर अपने वक्षस्थल से पीताम्बर हटा लिया और देवता का दर्शन कराते हुए बोले - “हे सरले ! देखो, मेरे दिलदार को देखो ! मेरे हृदय-सिंहासन पर प्रतिष्ठित देवता का दर्शन करो । मेरे हृदयकमल काननका राजहंस देखो ! मेरी आँखों की ज्योति देखो ! प्राणों की आत्मा देखो ।”

मुग्धस्वभावा श्रीकिशोरीजी ने अनुराग भरे नेत्रों से झाँक-कर देखा । उस समय श्रीप्रियाजी के रोम-रोम से उत्सुकता की निर्झरणी झर रही थी । उन्होंने देखा-- रत्नजटित सिंहासन पर सहस्रदलकमल की पराग मकरन्दपूरित कर्णिका पर प्रियतम को स्नेह-सुधा तरंगिनी से सराबोर करती हुई एक दिव्य मूर्ति विराजमान है-जिसके अंग-अंग की परछाई के सामने रति आदि रूपगर्वीली नायिकाओं का सौन्दर्य चूर-चूर हो रहा है । उनके बख्त-बुलन्द शान से अनन्त प्रभाकरों की प्रभा आकाश में भागती नज़र आ रही है श्रीगौलोकनाथ के हृदयाधार की ज्योति जगमग-जगमग झलमला रही है । स्नेह मूर्ति श्रीजू अत्यन्त अनुराग में मुग्ध होकर वन्दना करने लगीं और अपना नौलखा हार उतारकर भेंट करने लगीं । मैंने उस समय देखा-- श्रीस्वामीजी सहचरी रूप में गद्गद् हो ताली बजाकर हँसने लगे । शब्द सुनकर श्रीजू सचेत हुई और सोचने लगीं--“मुझसे क्या भूल हुई है ? क्या मैं अपने आपको भी पहचान न सकी ? क्या मैं अपने मुखसे अपनी प्रशंसा और अपने हाथों अपनी पूजा कर रही हूँ ?”

प्रियतम ने पुनः मन्दिर-द्वारपर पीताम्बर का पट खींच लिया । श्रीप्रियाजी प्रियतम के हृदय में अपने लिये ऐसा अनुराग, ऐसा आदर देखकर कृतज्ञता के भार से झुक गयीं और प्रेमपूर्ण चितवन से प्रियतम की नज़र बचा-बचाकर, उनकी ओर देखने लगीं । श्यामसुन्दर ने उनका संकोच मिटाने के लिये उन्हें अपने भुजपाश में बाँध लिया ।

युगल सरकार की जय हो !

मिठले बाबलसाईं की सदा ही जय हो !